और उस राज्य का नायक यीशु मसीह है। यशायाह ने लिखा: "क्यों कि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है: प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम अद्‌भुद युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त काल का पिता और शक्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सदा बढती रहेगी और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वो उसको दाऊद की राजगद्‌दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा।" (यशायाह 9:6-7, लूका 1:31-33)

जब यीशु इस पृथ्वी पर था उसके अनुयायी आशा करते थे कि वह अविलम्ब अपना राज्य स्थापित करेगा। परन्तु उसने स्पष्ट किया कि उसे प्रस्थान करना है तो उसने एक दृष्टान्त कहा इसलिए कि वे येरूशलेम के निकट थे ओर वे समझते थे कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रकट होने वाला हे। अत: उसने कहा "एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर लौट आए। उसने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मोहरें दी और उन से कहा मेरे लौट आने तक लेन-देन करना (लूका 19:11-13)"। यीशु अपेक्षा करता है कि उसके अनुयायी उसका काम करें और उस के पृथ्वी पर लौटने की प्रतीक्षा करें।

यीशु इस समय अपने पिता परमेश्वर के साथ है। परन्तु वे शीघ्र ही परमेश्वर का राज्य स्थापित करने को लौटेगें। यीशु ने अपने अनुयायियों से साफ-साफ कहा कि उसका राज्य उस समय तक स्थापित नहीं होगा जब तक वो न लौटे। उसने कहा कि युगान्त पर "सूरज और चाँद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे और पृथ्वी पर देश-देश के लोगों को संकट होगा क्योंकि वे समुन्दर के गरजने और लहरों के कोलाहल से घबरा जाऐंगे। भय और संसार पर आने वाली घटनाओं की बाट देखते-देखते लोगों के जी में जी न रहेगा क्यों कि आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे" (लूका 21:25-27)।

इन बातों को स्पष्ट करने के बाद उसने कहा "इसी रीति से जब तुम ये बातें होती देखो तब जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है (पद-31)"।

राज्य कहाँ होगा?

जब यीशु आयेगा वह पृथ्वी पर राज्य स्थापित करेगा। वह इन सभी राष्ट्रों को जीतेगा जो उसके शासन को स्वीकार नहीं करते हैं। वह मनुष्य द्वारा शासित राज्यों के स्थान पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करेगा। जकर्याह भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की कि यीशु क्या करेगा। "क्योंकि जब जातियों को येरूशलेम से लड़ने के लिए इकट्‌ठा करूँगा.....जब यहोबा निकल कर उन जातियों से लड़ेगा.....तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा....." (जकर्याह 14:2,3,9)।

बाइबिल सिखाती है कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर होगा। फिर भी कुछ लोग भूल से मान लेते हैं कि परमेश्वर का राज्य स्वर्ग में होगा क्यों कि एक लेखक मत्ती ने परमेश्वर के राज्य को स्वर्ग का राज्य कहा है। परमेश्वर का राज्य और स्वर्ग का राज्य दोनों का अभिप्राय एक ही है। (मत्ती 19:23,24)।

परमेश्वर का राज्य स्वर्ग से आयेगा परन्तु वो पृथ्वी पर स्थापित किया जाएगा। (मत्ती 5:5, 6:10)।

जब यीशु लौटेगा वह उन सब को जिन्होंने इस युग में सच्चाई से उसका अनुसरण किया अनन्त जीवन देगा। पौलुस ने स्पष्ट किया "क्यों कि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वह पहले जी उठेंगे" (1 थिस्सलुनीकिया 4:16)।

पहले पुनरूत्थान में सम्मिलित लोग यीशु मसीह के साथ उस शासन में भागीदार होंगे। "धन्य और पवित्र हैं जो इस पहले पुनरूत्थान के भागीदार हैं ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं पर वे परमेश्वर के और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे" (प्रकाशित वाक्य 20:6)।

राजा दाऊद इस्त्राइल पर राज्य करेगा (यिर्मयाह 30:9)। बारह प्रेरित इस्त्रायल के 12 कुलों पर राज्य करेंगे (लूका 22:29,30)। दूसरों को दूसरी जिम्मेदारियाँ दी जाएँगी। (लूका 19:11-19)।

एक हजार वर्ष तक यीशु और उसके सेवक इस पृथ्वी की समस्त जातियों का मार्ग दर्शन ओर नेतृत्व करेंगे (प्रकाशित वाक्य 5:10)।

परमेश्वर का राज्य किसकी तरह का होगा?

एक हजार वर्ष अविश्वसनीय शक्ति का समय होगा। वे देश जिसमें सदियों से शत्रुता थी शान्तिपूर्वक रहेंगे। "उस समय इस्राइल, मिस्त्र, ओर अश्शूर मिलकर पृथ्वी के लिए आशीष का कारण होंगे। क्यों कि सेनाओं का यहोवा उन तीनों को यह कहकर आशीष देगा, धन्य हो मेरी प्रजा मिस्त्र और रचा हुआ अश्शूर और मेरा निज भाग इस्राइल" (यशायाह 19:24, 25)।

यीशु लोगों को शान्ति का मार्ग दिखाएगा। "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जायेगा और सब पहाड़ियों से उँचा किया जायेगा और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेगें और बहुत सी जातियों के लोग जाएँगें और आपस में कहेंगे...."आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़ कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जांएँ : तब वह हमको अपने मार्ग दिखाऐगा ओर हम उसके पथों पर चलेगें। "क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन येरूशलेम से निकलेगा। वह बहुत से देशों के लोगों का न्याय करेगा और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों से हँसियाँ बनाएंगे। तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध तलवार फिन न चलाएगी: और लोग आगे को युद्धविद्या न सीखेगें। परन्तु वह अपनी दाखलता ओर अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे और कोई उनको न डराएगा" (मीका 4:1-5)।

एक हजार वर्ष तक कोई अकाल नहीं पड़ेगा। मरूस्थल खेती योग्य भूमि बन जाऐंगे। "क्यों कि जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरूभूमि में नदियाँ बहने लगेगीं। मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे" (यशायाह 35:67)।

लोगों के पास भरपूरी से खाने को होगा।" यहोवा की यह वाणी है देखो ऐसे दिन आते हैं कि हल जोतने वाला लवनेवाले को और दाख रौंदने वाला बीज बोनेवाले को जा लेगा (ओमोस 9:13)।

उस समय यीशु रोगियों को चंगा करेंगे । बि अंधों की आँखें खोली जाएगीं और बहरों के कान भी खोले जाऐंगे। तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़ियाँ भरेगा और गूँगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे (यशायाह 35:5-6)।

एक हजार वर्ष तक किसी प्रकार का भ्रग न होगा। जब यीशु मसीह लौटेगा तब शैतान जो सारे संसार को भ्रमित करता है

बन्दीगृह में डाला जायेगा। "फिर मैंने एक स्वर्गदूत स्वर्ग से उतरते देखा जिसके हाथ में अथाह कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी।उसने उस अजगर अर्थात पुराने सांप को जो इवलिस और शैतान है पकड़कर हजार वर्ष के लिए बांध दिया और उसे अथाह कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर लगा दी कि वह हजारवर्ष पूरे होने तक जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए" (प्रकाशित वाक्य 20:1-30)।

एक हजार वर्ष तक हर एक सच्चाई को जानेगा। केवल एक ही धर्म होगा। "तब उन्हें फिर एक दूसरे को यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो क्यों कि यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब मेरा ज्ञान रखेगें क्यों कि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगाऔर उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।

इस भ्रम का क्या कारण है?

सम्पूर्ण बाइबल इस सुसमाचार को बतलाती है कि परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर स्थापित किया जायेगा। जब यीशु मसीह आये उन्होंने सर्वत्र परमेश्वर के राज्य का पचार किया। कैसे यह संदेश खो गया? क्यों बहुत से लोग नहीं जानते कि बाइबिल परमेश्वर के राज्य के विषय में क्या कहती है?

इस युग में परमेश्वर ने शैतान को जो सारे संसार का भरमाने वाला हे (प्रकाशितवाक्य 12:9) को अनुमति दी है कि वह सारे संसार को भ्रमित करे। यह परमेश्वर की योजना नहीं है कि इस युग में हर एक परमेश्वर के राज्य को समझे जब यीशु मसीह इस संसार में पहली बार आए उन्होनें कुछ ही पर परमेश्वर के राज्य के रहस्य को प्रकट किया। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा "तुमको परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दी गयी और औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता है इसलिए वे देखते हुए भी न देखें और सुनते हुए भी न समझें" (लूका 8:10)।

इस समय परमेश्वर अपने राज्य के अगुवों की प्रशिक्षित कर रहा है। जो यीशु के संदेश को समझते हैं और विश्वास के साथ उसका अनुपालन करते हैं वे दुबारा जीयेंगे जब यीशु लौटेगें और परमेश्वर के राज्य में सहायक होगें? (प्रकाशितवाक्य 20:4) "जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुये न जी उटे (प्रकाशित वाक्य 20:5)। परमेश्वर के राज्य के 1000 वर्ष के बाद वह सब लोग जो कभी भी जीवित थे दोबारा जीयेगें और उनको सच्चाई को जानने का अवसर मिलेगा कि प्रभु की आज्ञा मानें। (मती 12:41,42 यहेजकेल 37:11-24)।

जब परमेश्वर ने हर एक को यह अवसर दिया है कि वह उसके मार्ग को जान ले तब धर्मी परमेश्वर के साथ सर्वकाल तक पूर्ण शान्ति में रहेगें। फिर मैने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा क्यों कि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी और समुद्र में भी न रहा। मैंने पवित्र नगर नये येरूसलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा। वह उस दुल्हिन के समान था जो अपने पति के लिए श्रंगार किया हो। फिर मैने सिंहासन में से किसी को उँचे शब्द से यह कहते हुये सुना "देख परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वो उनके साथ डेरा करेगा और वे उसके लोग होंगे परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा और उसके बाद मृत्यु न रहेगी और न शोक न विलाप न पीडा रहेगी पहली बातें जाती रहीं।" (प्रकाशितवाक्य 21:1-4)।

अब आप इस सच्चे सुसमाचार को जानते हो जिसका प्रचार यीशु ने किया। आप भी सर्वदा तक इस अद्भुद परमेश्वर के राज्य में रह सकते हो परमेश्वर का राज्य आपके जीवन का परमलक्ष्य होगा। यीशु ने कहा इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करों.....(मत्ती 6:33)।

यीशु ने यह भी कहा जो मुझसे है प्रभु! हे प्रभु! कहता है उनमें से हरएक स्वर्ग के राज्य में प्रवेशन करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है (मत्ती 7:21)।

हम उसके अनुयायी होने का दावा नहीं कर सकते। हमें वह करना है जिसकी वह आज्ञा देता है। (मत्ती 5:17-20)।

क्या आप उसको सिखाना प्रारम्भ करेगें जो परमेश्वर चाहता है ताकि आप उस अद्भुद संसार में जो आने वाला है भागीदार हो सकेगें?

To Learn more about the true Sabbath, ask us to send you our free booklet The Gospel fo the Kingdom. You also might want to read our booklet. The Road to Eternal Life. All of our booklets are free.

You can request or download our free booklets at our web site: www.gnmagazine.org, or you can write to:

United Church of God
P.O. Box 541027
Cincinnati, OH 45254-1027

E-mail: info@ucg.org

क्या यीशु मसीह का संदेश विलुप्त हो गया?

यीशु ने वास्तव में क्या शिक्षा दी? क्या अधिकतर मसीही सत्य में इसे जानते हैं? वह कौन सा सुसमाचार है जो यीशु लाया?

दो हजार वर्ष पूर्व यीशु मसीह नगर-नगर एक संन्देश जिसे हम "सुसंवाद" या "सुसमाचार" कहते हैं का प्रचार करते हुए गया। यद्यपि लाखों लोग इस बात का दावा करते हैं कि वे यीशु मसीह के अनुयायी हैं पर बहुत थोड़े ही जानते हैं कि उसने क्या शिक्षा दी। अधिकांश मसीहियों का ध्यान यीशु के जीवन,मृत्यु और पुनरूथान पर केन्द्रित है पर वे उस सन्देश की अवहेलना करते हैं जिसे वे लाए।मसीह केवल इसलिए नहीं आये कि जिएँ और पापों के लिए मरें। वे एक शिक्षक के रूप में भी आये। वो क्या सन्देश है जिसकी शिक्षा उन्होंने दी?

यीशु का सन्देश "परमेश्वर के राज्य" के सम्बन्ध में है। "युहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया और कहा समय पूरा हुआ और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है: " मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:14,15)। यीशु ने यह भी कहा "मुझे अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्यों कि मैं इसीलिए भेजा गया हूँ"।ये चकित करने वाली बात है कि अधिकांश लोग जो यह कहते हैं कि वे मसीह का अनुसरण करते हैं इस बात से अनभिज्ञ हैं कि परमेश्वर का राज्य जिसका प्रचार यीशु ने किया, क्या है?

परमेश्वर का राज्य वस्तुत: क्या है?

परमेश्वर के राज्य को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि मसीह का सन्देश कोई नया नहीं है। ये वही सन्देश है जो उसके जन्म से 700 वर्ष पूर्व यशायाह भविष्यवक्ता ने मसीह और उसके राज्य के सम्बन्ध में लिखा। यशायाह ने प्रकट किया कि परमेश्वर का राज्य एक शासन (सरकार) है